सरदार पटेल

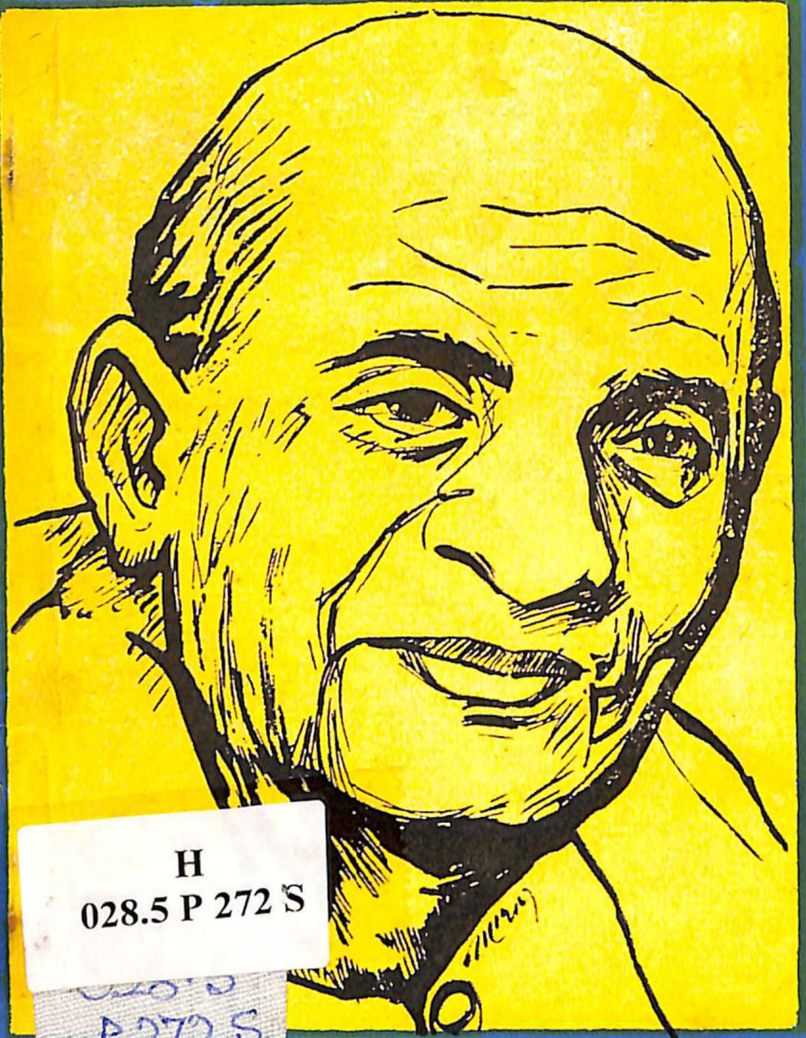

H
028.5 P 272 S
028.5
P 272 S

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SIMLA

सरदार पटेल

Surendra Kumar

सुरेन्द्र कुमार

S.K Publishers, New Delhi

एस० के० पब्लिशर्ज़

CATALOGUED

H
028.5
P 272 S

Acc. No. 77933
12/3/92
SIMLA.

Library IIAS, Shimla
H 028.5 P 272 S
00077933

मूल्य `8.(

संस्करण : 1991

प्रकाशक : एस० क० पब्लिशर्ज़
ए-47, अमर कालोनी, लाजपतनगर
नई दिल्ली-110024

© : प्रकाशक

मुद्रक : एस० एन० प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110

इतिहास पर हम जब भी अपनी दृष्टि डालते हैं तो हम देखते हैं कि भारतभूमि पर समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया, जिन्होंने भारतवर्ष का शीश कभी झुकने नहीं दिया। इन बड़े नेताओं तथा देशभक्तों ने अपने बलिदान और कर्तव्य से भारत को विदेशी दासता से मुक्त कराया।

परिचय—ऐसे ही एक देशभक्त ने 21 अक्टूबर, 1875 ई० को भारतभूमि पर जन्म लिया। बालक का नाम वल्लभभाई पटेल रखा गया। बालक के माता-पिता गुजरात के पटेलाद ताल्लुका के गांव कमरसद के निवासी थे।

गुजरात में कुरमी जाति की दो उपजातियाँ लवा और कदवा हैं। ये अपने को श्री रामचन्द्र के पुत्र लव और कुश के वंशज बताती हैं।

पटेल के पिता का नाम ज्वेरभाई था। यह एक साधारण कुरमी किसान थे। ये खेती-बाड़ी करके अपना काम चलाते थे। पटेल को भी कभी-कभा ये

अपने साथ ले जाते थे ।

बालक अपने पिता के काम में हाथ बंटाता था और अपने पहाड़े भी वहीं याद करता था ।

एक दिन पिताजी हल चला रहे थे । पटेल उनके पीछे अपना काम करते हुए पहाड़े भी स्मरण कर रहे थे । बालक पहाड़े याद करने में इतना मग्न था कि उसके पैर में डाब का कांटा चुभ गया तो भी उसे पता नहीं चला । वह अपना काम करते हुए निरन्तर आगे बढ़ रहा था ।

अचानक पिता की दृष्टि बालक के पैर की ओर गई । पैर से रक्त निकलता देखकर वे दंग रह गए । पिता ने बालक की दृढ़ता को सराहा और पुत्र के पैर में से कांटा निकालकर उस पर काड वृक्ष की पत्तियाँ रगड़ दीं, जिससे खून बहना बन्द हो गया ।

पिता ने पुत्र को महान व्यक्ति बनने का आशीर्वाद भी दिया ।

पटेल के पिता ज्वेरभाई भी बड़े देशभक्त थे । कहते हैं जब 1857 में भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम चल रहा था तो ज्वेरभाई ने अपना हल और फावड़ा फेंक दिया था और महारानी झाँसी के पास युद्ध में भाग लेने चले गए थे । जब इनका विद्रोह असफल हो गया तो ज्वेरभाई अपनी जान बचाने के लिए इधर-

उधर घूमते-फिरते थे। इन्होंने भी युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई थी। अन्त में ये पकड़े गये और इनको जेल में डाल दिया गया। इन्दौर के राजा मल्हार राव ने उनको अपने राजभवन में कैद कर लिया।

एक दिन मल्हार राव जेल के समीप बैठे हुए शतरंज खेल रहे थे। जेल की सलाखों से ज्वेरभाई भी बड़े ही ध्यान से शतरंज देख रहे थे। खेल के बीच राजा एक ऐसी चाल चलने लगा जिससे उसकी हार निश्चित थी। ज्वेरभाई ने राजा को टोक दिया और दूसरी चाल चलने को कहा। राजा ने उसका कहना मान लिया और राजा जीत गया। राजा ज्वेरभाई की योग्यता पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे जेल से छोड़ने की आज्ञा दे दी। तीन साल बाद वह अपने गांव वापस आए।

पटेल के बड़े भाई का नाम विट्ठलभाई पटेल था। पटेल की मां धार्मिक विचारों वाली थी।

शिक्षा

गांव में सातवीं कक्षा तक गुजराती में ही पढ़ाई होती थी। पटेल ने भी अपने गांव के स्कूल में ही पढ़ना आरम्भ किया। पटेल को यह स्कूल पसन्द नहीं

था। वे किसी अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ना चाहते थे। इन्होंने सातवीं श्रेणो पास कर ली। इसके उपरान्त पांचवीं श्रेणी तक अंग्रेज़ी भी एक प्राइवेट स्कूल में पास की। अब पटेल का मन इन विद्यालयों से ऊब गया था। अतः वे पटेलाद ताल्लुका में आ गए और वहीं पर अपनी पढ़ाई आरम्भ कर दी।

पटेल ने अपना जीवन अत्यन्त ही सादगी से आरम्भ किया। पटेल भाई पढ़ाई में अपना अधिक नाम नहीं कर सके। पटेल अपने गांव कमरसद से एक सप्ताह का भोजन लेकर पटेलाद जाते थे। गांव से वह पैदल ही पटेलाद पहुंचते थे। गाड़ी में नहीं जाते थे और इस तरह इन्होंने बचत करना भी बचपन में ही सीख लिया था।

अब पटेल भाई ने नडियाद हाई स्कूल में पढ़ना शुरू कर दिया। स्कूल में ये विद्यार्थियों के नेता बन गए। यदि कोई अध्यापक कोई अनुचित कार्य करता तो यह सहन नहीं करते थे और स्कूल में तुरन्त ही हड़ताल करवा देते। विद्यार्थियों की भलाई के लिए ये जान देने को तैयार रहते थे।

एक बार स्कूल में एक अध्यापक ने एक बालक को थोड़ी-सी भूल के कारण स्कूल से निकलवा दिया। पटेल को जब यह पता चला तो उन्हें क्रोध हो आया

और उन्होंने स्कूल में हड़ताल करवा दी। हड़ताल कई दिन चली। अन्त में अध्यापक ने अपनी भूल स्वीकार कर ली और पटेल ने भी हड़ताल समाप्त कर दी। इस घटना से पटेल को विद्यार्थी अपना सरदार मानते थे। इसके उपरान्त एक घटना और घटी।

नडियाद स्कूल के अध्यापक ने स्कूल में पुस्तकों की एक दुकान खोल रखी थी। विद्यार्थियों पर यह अध्यापक पुस्तकें खरीदने के लिए अनुचित दबाव डाला करता था। सरदार पटेल को यह अन्याय सहन नहीं हुआ। पटेल ने हड़ताल करवा दी। अध्यापक को झुकना पड़ा और अन्त में अपनी दुकान भी बन्द कर देनी पड़ी।

बड़ौदा हाई स्कूल में

अब पटेल नडियाद हाई स्कूल छोड़कर बड़ौदा के हाई स्कूल में प्रविष्ट हो गए। पटेल को संस्कृत कठिन लगती थी अतः इन्होंने गुजराती भाषा ही पढ़ना उचित समझा।

उस समय श्री छोटेलाल गुजराती पढ़ाते थे। इनको संस्कृत बड़ी प्रिय थी। उनकी इच्छा थी कि

विद्यार्थी संस्कृत पढ़ें। जब पटेल स्कूल में दाखिल हुए तो उन्होंने पटेल से कहा—"आइए महापुरुष ! आप संस्कृत छोड़कर गुजराती ले रहे हैं लेकिन संस्कृत के बिना गुजराती शोभा नहीं देती।" संस्कृत के उन्होंने कई लाभ भी गिना दिए।

यह सुनकर पटेल तनिक भी नहीं घबराए और उन्होंने तुरन्त ही उत्तर दिया—"यदि सभी विद्यार्थी संस्कृत ही पढ़ने लगे तो फिर आप गुजराती किसको पढ़ाएँगे।" गुरुजी को यह उत्तर सुनते ही क्रोध आ गया। बालक को पिछली बेंच पर खड़ा होने का दण्ड भी सुना दिया गया। मास्टरजी ने पटेल को शरारती बालक समझकर तंग करना आरम्भ कर दिया। उनके तंग करने का ढंग भी निराला ही था। वह प्रतिदिन पटेल को घर से पहाड़े लिखकर लाने के लिए कहने लगे।

कुछ दिनों तक तो पटेल यह सजा चुपचाप सहन करते रहे। परन्तु प्रति दिन पहाड़े लिखकर लाने की आज्ञा अब उन्हें असह्य हो गई थी। उन्होंने इसका विरोध करने की योजना बनाई।

गुजराती में पहाड़े शब्द को पाड़े भी कहते हैं जिसका अर्थ गाय-भैंस का बच्चा भी होता है।

एक दिन मास्टर ने पूछा—"पाड़े लिखकर लाए

हो या नहीं ?" पटेल ने उत्तर दिया—"मास्टरजी, पाड़े लाया तो था परन्तु वे स्कूल के दरवाजे पर ही भिड़ करके भाग गए।" मास्टर को पटेल के उत्तर पर बहुत क्रोध हो आया। मास्टर ने दूसरे दिन के लिए घर से दो सौ पहाड़े लिखकर लाने के लिए आज्ञा दे दी।

बालक दूसरे दिन स्कूल आया। मास्टर साहब ने पहाड़े दिखाने को कहा। पटेल ने तुरन्त अपनी कॉपी आगे बढ़ा दी। उस पर लिखा था—दो सौ पहाड़े।

मास्टर का पारा गर्म हो गया। उन्होंने तुरन्त हीं पटेल की शिकायत प्रधानाध्यापक के पास कर दी। प्रधानाध्यापक ने आपको बुलाया और आपसे घटना का विवरण पूछा। पटेल ने पूरी कथा साफ-साफ सुना दी। आपको कुछ सजा न मिली। आपके और मास्टर के बीच एक दरार पड़ गई।

ठीक इसके तीन मास बाद वल्लभ भाई एक दूसरे शिक्षक से टकरा गए। फिर शिकायत प्रधानाध्यापक के पास गई। प्रधानाध्यापक ने पटेल को स्कूल से निकालने का आदेश दे दिया।

अब पटेल नडियाद आ गए। तब पटेल की आयु लगभग 22 वर्ष थी। यहीं रहकर इन्होंने किसी तरह

मैट्रिक परीक्षा पास की। क्योंकि पढ़ने-लिखने में पटेल होशियार नहीं थे।

पटेल के पिता धनी नहीं थे। अतः वे पटेल को आगे पढ़ाने में असमर्थ थे। पटेल भी और पढ़ना नहीं चाहते थे। उनकी इच्छा तो बैरिस्टर बनने की थी। अतः उन्होंने अपने क़दम इसी लक्ष्य की ओर बढ़ाने शुरू कर दिए।

पटेल विद्यार्थी-जीवन में ही अंग्रेज़ों की ओर आकर्षित होने लगे थे। उनको यह आभास हो गया था कि अंग्रेज़ बहुत अच्छे तथा अक्लमन्द व्यक्ति हैं। वे उनके देश में जाकर पढ़ने को लालायित होने लगे। परन्तु पटेल के पास धन नहीं था अतः वे विवश हो गए। उनके हृदय में विलायत जाकर बैरिस्टरी की शिक्षा प्राप्त करने की प्रबल इच्छा थी। परन्तु वे कहीं से भी पैसे का प्रबन्ध करने में असमर्थ रहे और उन्होंने अब दृढ़ निश्चय किया कि वे स्वयं धन कमाकर ही विलायत पढ़ने के लिए जाएंगे।

अब पटेल को धन कमाने की चिन्ता सवार हुई। वे अपने मित्र काशी भाई के यहाँ आ गए और अपनी योजना को कार्य-रूप में परिवर्तित करने लगे।

अपने मित्र के यहाँ रहते हुए पटेल की काँख में एक फोड़ा हो गया। बहुत इलाज किया गया, परन्तु

फोड़ा ठीक नहीं हुआ। अन्त में यह निश्चित हुआ कि फोड़े को चीरा लगवा दिया जाए। नाई आया। नाई ने चीरा के बदले फोड़े को गर्म सलाखों से जलाना ठीक बताया। सलाखें गर्म की गईं। नाई फोड़े को जलाने से घबरा गया। पटेल ने यह भांप लिया और उसने गर्म सलाखों से स्वयं ही फोड़े को जला दिया। सरदार इससे तनिक भी नहीं घबराए। देखने वाले पटेल की सहनशक्ति को देखकर हैरान हो गए।

अपने मित्र काशी भाई के पास रहते हुए इन्होंने मुख्तारी पास कर ली और गोधरा में ही वकालत करने लगे। इनके भाई विट्ठलभाई भी गोधरा में ही वकालत करते थे और कुछ समय पूर्व ही वे बोरसद गए थे। सरदार ने उनकी जान-पहचान का भी लाभ उठाया। विट्ठलभाई ने सरदार को अपने पास आने का संदेश भेजा, परन्तु पटेल नहीं गए। गोधरा में सरदार के पास कुछ भी सामान नहीं था। अतः इन्होंने कर्ज लेकर थोड़ा-थोड़ा सामान इकट्ठा किया और बड़ी तंगी के साथ अपने जीवन की शुरुआत की।

इन्हीं दिनों गोधरा में प्लेग फैल गया। कचहरी के किसी क्लर्क के लड़के को भी प्लेग ने दबा लिया। उसको बुखार के साथ-साथ एक गिल्टी भी निकल

आयी। पटेल ने उस लड़के की दिन-रात सेवा की, परन्तु लड़का बच नहीं सका।

सेवा करते-करते पटेल को भी प्लेग हो गया परन्तु भगवान की कृपा से पटेल शीघ्र ही ठीक हो गए।

जब सरदार को प्लेग हो गया तो उन्होंने अपनी पत्नी को कमरसद भेज दिया। पति तो ठीक हो गए, परन्तु पत्नी को प्लेग हो गया।

सरदार को पत्नी की बीमारी का पता चला तो वे उसे गांव से इलाज के लिए बम्बई ले आए। सरदार पत्नी को बम्बई छोड़कर स्वयं गोधरा आ गए। पटेल पत्नी की बीमारी से दु:खी थे। परन्तु सरदार एक केस लड़ रहे थे अतः उन्होंने लोगों को, जिनका मुकदमा लिया था, भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ा। उनके मुकदमे के लिए पटेल को बराबर बम्बई से गोधरा आना पड़ता था।

एक दिन जब मुकदमे की सुनवाई हो रही थी तो उन्हें एक तार मिला। तार को पढ़कर उन्होंने चुपचाप उसे अपनी जेब में रख लिया और मुकदमे की सुनवाई होती रही। अदालत समाप्त होने पर ही उन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु के तार के बारे में बताया।

थोड़े दिन गोधरा रहने के बाद पटेल बोरसद आ

गए। यहाँ पर फौजदारी के मुकदमे अधिक होते थे। यहीं पर इन्हें मनुष्यों के विचित्र स्वभावों का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो गया। ये बाल की खाल निकालने तथा जिरह करने में बड़े-बड़ों के कान काटने लगे थे। इनकी दलीलों को सुनकर सभी दंग रह जाते थे। पुलिस के अफसर भी इनसे घबराते थे। एक अंग्रेज़ मजिस्ट्रेट जिसका नाम हस्वेण्ड था, लोगों को बहुत तंग किया करता था। पटेल ने अपनी कानूनी योग्यता से उसको इतना तंग किया कि वह सदैव के लिए सुधर गया।

बोरसद में पटेल की वकालत शीघ्र ही चमक उठी। सबसे अधिक अपराध इसी इलाके में होते थे। अतः सरकार ने इधर के मुकदमों की सुनवाई के लिए एक खास मजिस्ट्रेट को नियुक्त किया। इसका काम सिर्फ प्रथम श्रेणी के मुकदमों की सुनवाई करना ही था। सरकार की ओर से भी इस अदालत में एक वकील रखा गया।

पटेल भाई की वजह से सभी अभियुक्त छूटने लगे। सरदार की युक्तियां इतनी तर्क-संगत थीं कि मजिस्ट्रेट अपराधी को कुछ भी सज़ा नहीं दे सकते। लाचार होकर अभियुक्त को बरी कर दिया जाता था।

पुलिस अधिकारी तथा वकील भी घबराने लगे। सरकार ने पूछ ताछ की। पुलिस तथा अन्य अधिकारियों ने सरकार से अदालत बदलने के लिए कहा। सरकार ने उनकी बात मान ली और अदालत को आनन्द ले जाने का आदेश दे दिया।

सरदार ने भी अपना सामान बोरसद से उठा लिया और अपना आफिस वह भी आनन्द ही ले आए। यहां पर भी यही परिणाम निकला। अपराधी पहले की ही भांति छूटने लगे। सरकार ने अब अपना निर्णय बदल दिया और एक वर्ष के भीतर ही अदालत को फिर आनन्द से बोरसद ले जाया गया।

सरदार ने यहां पर रहते हुए बहुत-से प्रसिद्ध मुकदमे जीते जिनमें से निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं। इन मुकदमों को देखने से सरदार की तीव्र बुद्धि तथा कार्य करने की योग्यता का भी पता चलता है।

रेलवे पुलिस में पटेल के एक मित्र इन्स्पेक्टर थे। उनकी अपने अफसर के साथ नहीं बनती थी। दोनों में काफी विरोध था। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने चोरी का जुर्म लगाकर इन्स्पेक्टर को बन्द करवा दिया। मामला अदालत में भेजने से पूर्व सुपरिण्टेण्डेण्ट ने सारी जांच स्वयं की। वह यह जानना चाहता था कि पहले भी कभी अभियुक्त को सजा हुई है या नहीं। इसी

चिंता में वह लीन था। इस बात का जब इन्स्पेक्टर को ज्ञान हुआ तो उन्होंने स्वयं सुपरिण्टेण्डेण्ट को जाकर बताया कि आज से 30 वर्ष पूर्व उसे सिर्फ 9 मास की सजा हुई और एकान्त में ही रखा गया था। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने यह सब लिखकरक तथा अभियुक्त के उस पर हस्ताक्षर कराके मुकदमा अदालत में पेश कर दिया।

इन्स्पेक्टर ने सरदार को अपना वकील बनाया। परन्तु सरदार बीमार हो गए और उनके स्थान पर पटेल के भाई मुकदमे की पैरवी करने गए। इनके साथ सरकारी वकील की कुछ झड़प हो गई। मजिस्ट्रेट ने अभियुक्त को छः मास की सजा सुना दी। विट्ठलभाई के विरुद्ध अपने फैसले में मजिस्ट्रेट्र ने कड़ी आलोचना भी की।

सरदार को जब यह पता लगा तो उन्हें दुःख हुआ। शीघ्र ही स्वस्थ होने पर सरदार ने सेशन जज के यहाँ इस मामले के निर्णय के विरुद्ध अपील कर दी। शीघ्र ही अपील की सुनवाई हुई। सरकारी वकील ने बताया कि अभियुक्त को पहले भी 9 मास की सजा हो चुकी है। यह उल्लेख उसने चार्ज-शीट पर से जज को बताया। सफाई बैरिस्टर यह सुनकर चुप हो गए। जज ने इसका जवाब मांगा तो उनसे कुछ भी

उत्तर नहीं बन पड़ा। अभियुक्त का भविष्य खतरे में था। सरदार ने कुछ देर सोचा, फिर अदालत में खड़े होकर अदालत से अभियुक्त को पहले सजा होने का प्रमाण मांगा और उसे दिखाने की जज से प्रार्थना की। जज ने प्रमाण दिखाने का आदेश दिया। सरदार ने प्रमाण देखा तो हैरान हुए।

सरदार ने प्रमाण देखकर जज को बताया, कि अपराधी को तीस साल पहले 9 मास की सजा हुई थी। इसके बाद जज का ध्यान चार्ज-शीट की इस बात की ओर दिलाया गया कि चार्ज-शीट में अपराधी की उम्र 30 वर्ष लिखी हुई है। अदालत में बैठे लोग यह सुनकर हंस पड़े। सरकारो वकील के हाथों के तोते उड़ गए। सरदार नं सबकी कड़ी आलोचना की और अपने भाई के ऊपर की गई आलोचना को भी उसने रद्द करवा दिया और अभियुक्त भी रिहा करवा दिया गया। आलोचना में सुपरिण्टेण्डेण्ट को भी नहीं छोड़ा गया और उसे त्याग-पत्र देना पड़ा।

इसी तरह सरदार ने कई और दिलचस्प मुकदमों को पैरवी करके लोगों को न्याय दिलाया।

अब सरदार ने अपनी धाक चारों ओर जमा ली थी। सरदार के पास काफी धन हो गया था। अब उन्हें अपनी आकांक्षा पूर्ण होती हुई दिखाई दी। अब

वे बैरिस्टरी पास करने के लिए विलायत जाने की सोचने लगे।

विलायत जाने के लिए आपने एक कम्पनी से पत्र-व्यवहार भी किया। कम्पनी का एक पत्र संयोग से बड़े भाई के हाथ में पड़ गया। पत्र पढ़कर उनके मन में भी विलायत जाने की इच्छा उत्पन्न हो गई। इन्होंने पटेल से कहा, "मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूं; अतः तुम मुझे विलायत जाने दो, जब मैं पढ़कर वापिस आ जाऊंगा तब तुम विलायत चले जाना। यदि मैं अब नहीं गया तो फिर कभी भी न जा सकूंगा।"

सरदार पटेल ने अपने बड़े भाई की बात मान ली और इससे एकमत हो गए कि पहले विट्ठलभाई ही विलायत जाएं। जब वे वापिस पढ़कर आ जाएंगे तब पटेल विलायत चला जाएगा।

पटेल ने अपने भाई की बात ही नहीं मानी बल्कि उनको विलायत में खर्च भेजने की जिम्मेदारी भी ले ली।

विट्ठलभाई घर में बिना बताए विलायत चले गए। पटेल जब बोरसद वापिस लौटे तभी सबको विट्ठलभाई के जाने का समाचार ज्ञात हुआ।

पटेल की वकालत इस समय पूरे ज़ोर पर थी। पानी की तरह पैसा आ रहा था। सरदार को अब

कोई चिन्ता नहीं थी ।

विट्ठलभाई लगभग तीन वर्ष तक विलायत में रहे । पढ़ाई समाप्त करने पर वे वापिस आ गए । इन्होंने बम्बई में अपनी वकालत शुरू की और सपरिवार वहीं रहने लगे ।

अब पटेल ने भी विलायत जाने की तैयारी कर ली । उन्होंने अपने विदेश-गमन के बारे में किसी को भी नहीं बताया । सभी तैयारी उन्होंने पहले ही कर ली थी । अपने बच्चों के पालन-पोषण का भार उन्होंने छोटे भाई काशीभाई को सौंप दिया था । 10 अगस्त, 1909 को वे विलायत के लिए रवाना हो गए ।

लन्दन पहुंचकर इन्होंने अपने रहने का ढंग बदल दिया । कांटे-छुरियों का भी भोजन करते समय प्रयोग करने लगे । कुछ पश्चिमी सभ्यता का भी इन पर प्रभाव पड़ा ।

ये यहां पर मिथिल-टेम्पुल में पढ़ने लगे । यहां पर इन्होंने मिथिल-टेम्पुल का पुस्तकालय जो इनके घर से 11 मील दूर था, वहां जाकर यह दिन-भर पढ़ा करते । दिन में इन्होंने 17-17 घंटे तक भी पढ़ाई की । भोजन करने का भी इनको ध्यान नहीं रहता था । वहीं पर ये अपने लिए दूध-रोटी मंगा लिया करते थे । कभी-कभी पढ़ने में ये इतने मग्न हो जाते कि

इनको पुस्तकालय के बन्द होने के समय का भी ध्यान नहीं रहता था। जब चपरासी आकर इनको बताता कि पुस्तकालय के बन्द होने का समय हो गया है तब कहीं जाकर ये अपना सामान उठाते थे और पैदल ही अपने निवास-स्थान को रात के समय वापिस आते थे। पैदल चलने का इनको प्रतिदिन अभ्यास हो गया था और इससे इनका स्वास्थ्य भी ठीक हो गया था।

परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि यह शीघ्र ही अपने लक्ष्य की ओर तीव्र गति से बढ़ने लगे।

बैरिस्टरी की परीक्षा इन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। परीक्षक इनके प्रश्नों के उत्तरों से बहुत प्रभावित हुआ और इनकी बड़ी प्रशंसा की। सरदार को 50 पौंड का वज़ीफा मिला और इनकी फीस भी माफ कर दी गई।

इनकी योग्यता को देखकर एक परीक्षक ने इनको कोई ऊंचा पद देने की भी सिफारिश की।

भारतवासियों ने भी इनको काफी मान दिया।

इंग्लैंड में इन्होंने अपना जीवन पूर्ण सादगी से बिताया। वहां इनके रहने का ढंग पूर्णतया भारतीय ही रहा। इन्होंने अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाया। पास होने पर ये दूसरे देशों के भ्रमण के लिए नहीं गए। इसके पश्चात् इन्हें दुबारा विदेश जाने का भी

अवसर नहीं मिला।

सरदार अत्यन्त ही सहनशील व्यक्ति थे। जब ये लन्दन में थे तो एक विद्यार्थी ने इनसे 75 पौंड उधार ले लिये थे। जब पटेल ने रुपया वापिस मांगा तो आपस में कहा-सुनी हो गई। विद्यार्थी ने पटेल के साथ अशिष्ट व्यवहार किया और सरदार से नाराज हो गया और उनसे बोलना तक बन्द कर दिया। सरदार जब वापिस आ गए तो उस विद्यार्थी ने रुपये वापिस भेज दिए और अपने व्यवहार के लिए क्षमा भी मांगी।

इसी प्रकार सरदार की सहनशक्ति का एक और उदाहरण सामने आया है।

सरदार जिस मकान में रहते थे, एक दिन नहाते समय इनका पाँव फिसल गला। बाद में इनको बुखार तथा पैर में दर्द मालूम हुआ। पटेल एक नर्सिंग होम में प्रविष्ट हो गए। वहाँ पर इनको कोई आराम नहीं हुआ। पैर का दर्द बढ़ रहा था। नर्सिंग होम के डॉक्टरों ने सरदार को पैर कटवाने के लिए कहा परन्तु सरदार इसके लिए राज़ी नहीं हुए।

सरदार ने उस सर्जन की चिकित्सा छोड़ दी और डॉक्टर वी० टी० पटेल नाम के एक प्रोफेसर ने इनकी पूर्णतया जांच की। इनको दुबारा आपरेशन करवाने की सलाह दी। पटेल को यह भी कहा कि वे बिना

बेहोशी की दवा लिये आपरेशन करवाएँ तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। पटेल ने उनकी बात मान ली और बिना बेहोश हुए ही आपरेशन करवा लिया। पटेल की सहनशक्ति को देखकर डॉक्टर भी दंग रह गया।

पटेल विलायत से 23 फ़रवरी, 1913 को बम्बई पहुंचे। इन्होंने बम्बई में अपनी वकालत शुरू नहीं की। ये अहमदाबाद आए और यहां पर इन्होंने अपनी वकालत आरम्भ कर दी। थोड़े ही दिनों में पटेल बहुत विख्यात हो गए और अहमदाबाद के बड़े बैरिस्टरों में गिने जाने लगे। बड़े-बड़े मुकदमों में आपने पैरवी की और अपने अभियुक्तों को बरी करा दिया। लक्ष्मी की वर्षा होने लगी।

अब पटेल पर पश्चिमी सभ्यता का रंग जमने लगा। अपने आफिस को पटेल ने नया रूप दिया और पश्चिमी फर्नीचर से उसे सजाया। पटेल अब ठाठ से रहने लगे।

सरदार पटेल ने अपनी फीस अहमदाबाद के बैरिस्टरों से अधिक रखी। सरदार अदालत के काम के बाद क्लब भी जाने लगे। क्लब का नाम था गुजरात क्लब। यहाँ पर ये चमनलाल बैरिस्टर के साथ ब्रिज खेला करते। ब्रिज खेलने में भी ये बड़े होशियार हो गए। श्री वाडिया तथा ब्रोमर नाम के वकीलों

77913

के साथ श्री चमनलाल तथा पटेल का ब्रिज में मुकाबला भी हुआ। पटेल तथा चमनलाल ने अपने-अपने विरोधियों को बुरी तरह पराजित कर दिया।

अब इस नवयुवक का व्यक्तित्व निखर आया। इसकी ओर नये नवयुवक आकर्षित होने लगे। कुछ लोग इनकी आलोचना भी करने लगे।

बम्बई में जब विट्ठलभाई के पास धन हो गया तो उन्होंने अपना ध्यान लोकसेवा की ओर भी दिया। दोनों भाइयों ने मिलकर यह निर्णय किया कि बड़े भाई देश-सेवा करें और पटेल परिवार के सदस्यों का पालन-पोषण करेगा।

विट्ठलभाई राजनैतिक क्षेत्र में भी काफी प्रसिद्ध हुए। सन् 1919 में लेजिस्लेटिव एसेम्बली के लोअर हाउस के प्रधान चुने गए। विट्ठलभाई ने अपनी योग्यता से इस पद का मान बढ़ा दिया। विदेशी भी इनके कार्य करने की योग्यता की प्रशंसा करने से नहीं चूकते थे।

गांधी जी से भेंट

कुछ दिन पूर्व ही महात्मा गांधी अहमदाबाद आकर रहने लगे। वे अभी अफ्रीका के आन्दोलन में

सफलता प्राप्त करके लौटे थे। पटेल की भेंट गांधी जी से एक क्लब में हुई।

गांधी जी अहिंसावादी थे। वे अहिंसा द्वारा ही भारत को स्वतंत्र कराना चाहते थे और जनता में भी अहिंसा का प्रचार करते थे। जनता हैरान थी कि अहिंसा के बल पर विदेशी सत्ता से भला कैसे टक्कर ली जा सकती है! सब लोग गांधी जी का मज़ाक उड़ाने लगे और गांधी जी के विचारों पर हंसने लगे।

आरम्भ में सरदार पटेल पर भी गांधी जी के शब्दों का कोई असर नहीं हुआ क्योंकि पटेल को राजनैतिक जीवन से कुछ सरोकार नहीं था।

अहमदाबाद में सन्ध्या के समय वकील क्लब में इकट्ठे होते थे और वहीं पर गांधी जी के बारे में भी चर्चा होती थी। वे सब मिलकर गांधी जी की हंसी उड़ाते।

एक दिन गांधी जी ने क्लब के सदस्यों के सामने अपना भाषण दिया। जब गांधी जी भाषण कर रहे थे तो पटेल एक कोने में ताश खेलते हुए हंस रहे थे।

गांधी जी के शब्दों में जादू था जो लोगों को चुम्बक की तरह अपनी ओर खींच लेता था। पटेल भी इनकी ओर खिचने लगे और गांधी जी के दृढ़ विश्वास

की प्रशंसा करने लगे। गांधी जी ने गुजरात के राजनैतिक जीवन में नया प्रकाश डाल दिया।

पटेल ने अपना राजनैतिक जीवन गोधरा से आरम्भ किया। सबसे पहले पटेल और गांधी जी का यहीं साथ हुआ।

इस समय गुजरात में बेगार प्रथा जोरों पर थी।

इस प्रथा को हटाने के लिए एक सम्मेलन हुआ जो गोधरा कांफ्रेंस के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सभापति गांधी जी थे। बेगार प्रथा को हटाने के लिए तथा सम्मेलन के प्रस्तावों को कार्यान्वित करने के लिए एक कमेटी का भी गठन हुआ जिसका मन्त्रीपद पटेल को सौंपा गया। मन्त्री-पद पर रहते हुए पटेल नें अपनी जिम्मेदारी को समझा और उसको पूरी योग्यता से पूरा भी किया।

पटेल ने सबसे पहले बेगार प्रथा को मिटाने का प्रण किया। सरदार ने कमिश्नर को एक पत्र लिखा जो सरकार के नाम एक नोटिस था। पत्र में सात दिन के भीतर ही बेगार प्रथा को बन्द करने के लिए कहा था और साथ में यह भी लिखा कि यदि 7 दिन के अन्दर बेगार प्रथा को समाप्त नहीं किया गया तो बेगार प्रथा को हाईकोर्ट के फैसले के आधार पर गैर-

कानूनी घोषित कर दिया जाएगा ।

सरदार को इस पत्र का शीघ्र ही उत्तर मिला । कमिश्नर ने सरदार को बातचीत के लिए बुलाया और सरदार के कहने के अनुसार बेगार की समाप्ति की घोषणा कर दी ।

गांधी जी ने जब यह समाचार सुना तो वे बहुत खुश हुए ।

गांधी जी इस समय चम्पारन में थे। यहां नील का व्यवसाय अंग्रेजों के हाथ में था । अंग्रेज किसानों को बहुत परेशान करते थे । गांधी जी ने उनका दुःख दूर करने में पूरी सहायता की ।

अब गांधी जी ने अपने विचारों को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए एक योजना बनाई । सरदार पटेल को यह योजना बहुत पसन्द आई । गांधी जी को सरदार पटेल का साथ बड़ा अच्छा लगा । अच्छा लगता क्यों न, उन्हें एक योग्य और विश्वस्त साथी जो मिल गया था । गांधी जी के साथ रहने पर पटेल की दशा बदल गई ।

सरदार पटेल 1916 ई० में गांधी जी के साथ मिल गए । सरदार ने अपनी वकालत छोड़ दी । गांधी जी के साथ वे एक मित्र के रूप में रहने लगे । महात्मा गांधी ने जितने भी आन्दोलन किए, पटेल ने सबमें

गांधी जी का साथ दिया। इस तरह वे महात्मा गांधी के दाहिने हाथ बन गए।

खेड़ा सत्याग्रह

सन् 1917 में वर्षा ऋतु में फसलें खराब हो गईं। खेड़ा जिले में अकाल जैसी स्थिति हो गई। किसानों में इतनी शक्ति नहीं थी कि वे लगान दे सकें। फसल खराब हो जाने पर वहां के किसानों ने सरकार से लगान माफ करने के लिए प्रार्थना की। बेचारे किसानों की पुकार की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। सरकार चाहती थी कि किसानों से लगान जबरदस्ती प्राप्त कर लिया जाए।

किसान दुविधा में थे कि ऐसे समय में लगान कहां से दें। पशुओं को चारा भी नहीं प्राप्त हो रहा था। गरीब लोगों के भूखे मरने की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

इस पर गांधी जी ने खेड़ा में लगान न देने का आन्दोलन आरम्भ कर दिया। उधर चम्पारन में भी गांधी जी ने अंग्रेज़ जमींदारों के विरुद्ध मोर्चा खोल रखा था। अतः गांधी जी के लिए यहां रहना उचित नहीं था। उन्होंने इस सत्याग्रह का भार पटेल को

सौंप दिया। पटेल ने इसको स्वीकार भी कर लिया। गांधी जी को पटेल पर जिम्मेवारी सौंपते हुए अति प्रसन्नता हुई। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि पटेल अपनी ज़िम्मेदारी पूरी तरह निभाएगा और सफलता भी उसकी होगी।

पटेल ने अब विदेशी पहनावा उतारकर स्वदेशी पहनावा पहन लिया और गांव-गांव में घूमना आरम्भ कर दिया। इन्होंने किसानों में नव जागरण पैदा किया। किसानों को लगान न देने के लिए उभारा। थोड़े ही दिनों में जिले के सारे किसान सरकार को लगान न देने के लिए तैयार हो गए।

आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। सरकार की आंखें भी अब खुलीं। आन्दोलन को जोर पकड़ता देख सरकार ने किसानों की मांग स्वीकार कर ली और उनका लगान माफ कर दिया।

काला कानून

1918 में जर्मनी और इंग्लैंड में युद्ध छिड़ गया। इस बड़ी लड़ाई में गांधी जी तथा अन्य नेताओं ने सरकार की बहुत सहायता की। गांधी जी ने गांव-गांव घूमकर जनता को सेना में भरती कराने में पूरा सहयोग दिया

और सरकार को चन्दा भी इकट्ठा करके दिया। सभी ने तन-मन और धन से विदेशी सत्ता की सहायता की। अंग्रेज़ों की जीत हुई। नेताओं को आशा थी कि विदेशी सरकार खुश होकर देश का कुछ भला करेगी, परन्तु अपना उल्लू सीधा करने वाली कहावत पूरी तरह चरितार्थ हुई। अंग्रेज़ों ने भी आंखें बदल लीं।

भारत की सहायता के बदले विदेशी सरकार ने रोलट एक्ट पास कर दिया। इस एक्ट का दूसरा नाम काला कानून था। इस कानून के पास हो जाने से पुलिस के अधिकारों में बढ़ोत्तरी हो गई। पुलिस को यह अधिकार मिल गया कि वह किसी भी व्यक्ति पर शक हो जाने पर उसको पकड़ सकती थी। इन लोगों के मुकदमे का फैसला बिना किसी वकील के तथा बिना कोई सफाई लिये हुए किया जा सकता था।

सारे भारत में काले कानून का विरोध हुआ। पं० मदनमोहन मालवीय दिल्ली की बड़ी सभाओं में इस कानून का विरोध कर रहे थे, पर सरकार ने काला कानून पास कर ही दिया।

काले कानून को बनाने वाली सरकार को हटाने के लिए महात्मा गांधी ने 23 मार्च, 1919 ई० को जनता को 24 घंटे का उपवास करने के लिए कहा। 6 अप्रैल को भूखे रहकर प्रार्थना करने का भी लोगों

से आवाहन किया।

गलती से 30 मार्च को दिल्ली में हड़ताल हो गई। हड़तालियों तथा दुकानदारों में कुछ झगड़ा भी हो गया। सेना ने गोली चला दी, फलस्वरूप कुछ आदमी मर गए। 6 अप्रैल को सम्पूर्ण भारत में काले कानून के विरुद्ध हड़ताल हो गई।

दिल्ली की जनता में क्रोध की भावनाएं उत्पन्न हो गई थीं। वे प्रतिशोध लेने पर उतर आए थे। गांधी जी उनको शांत करने के लिए दिल्ली जा रहे थे। सरकार ने गांधी जी को दिल्ली पहुंचने से पहले ही हिरासत में ले लिया और वे दिल्ली न पहुंच सके। सरकार के इस व्यवहार से पंजाब-वासी भी उत्तेजित हो गए। पंजाब के दो बड़े नेताओं को भी पकड़ लिया गया और उनको पंजाब के बाहर भेज दिया गया। यह सब देखकर अमृतसर का एक शांति दल डिप्टी कमिश्नर से मिलने उनके बंगले की ओर गया। यह शांति दल अपने दोनों नेताओं को प्रार्थना करके छुड़ाना चाहता था। रास्ते में इस दल को रोका गया और इस निहत्थे शांति दल पर गोली भी चलाई गई। इससे जनता ने और उग्र रूप धारण कर लिया। उसने रास्ते में जो भी अंग्रेज उसे मिला उसे खूब मारा।

अमृतसर में राष्ट्रपति शासन हो गया। नगर का

प्रबन्ध जनरल डायर के हाथों में दे दिया गया। जनरल डायर ने नगर में सभा करने पर रोक लगा दी। 13 अप्रैल को जलियांवाला बाग में सभा हुई। सभा में बड़ी भीड़ थी। सभा जिस समय पूर्ण विकसित थी तो जनरल डायर ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। 14 मिनट तक गोली चली। बाग के चारों ओर पुलिस का पहरा था। कोई भी भाग नहीं सकता था। बाग में बहुत भीड़ थी। बहुत-से बूढ़े, बच्चे, स्त्रियां तथा नवयुवक मरे और घायल हो गए।

लाहौर, अमृतसर, कसूर आदि स्थानों पर सेना ने शासन सम्भाल लिया। जनता तथा स्त्रियों की असमत लूट ली गई। लोगों को नंगा करके पीटा गया। वायुयानों से घरों पर गोले चलाए गए। ऐसे निर्दयी अधिकारी को सरकार ने क्षमा कर दिया और वापिस विलायत भेज दिया। कई वर्ष बाद ऊधमसिंह ने विलायत जाकर डायर को गोली से भून दिया।

असहयोग आन्दोलन

इन दोनों घटनाओं से जनता में रोष की भावना उत्पन्न हो गई। अब स्वतंत्रता की लहर देश के कोने-कोने में उठने लगी। गांधी जी को भी इन घटनाओं से

गहरा आघात पहुंचा। उन्होंने 1920 में कलकत्ता के अधिवेशन में अहिंसात्मक असहयोग का निश्चय किया। कौंसिलों, स्कूलों और अदालतों के बहिष्कार के बारे में प्रस्ताव पास हुए। इसके जवाब में असंख्य विद्यार्थियों ने स्कूलों तथा कॉलेजों में जाना बन्द कर दिया। वकीलों ने वकालत छोड़ दी। सरकारी कर्मचारियों ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिए।

असहयोग का आन्दोलन आरम्भ होते ही महात्मा गांधी ने 'कैसरे हिन्द' का तमगा वायसराय को वापिस कर दिया। पटेल, पं० मोतीलाल, पं० जवाहरलाल आदि ने देश में घूम-घूमकर सरकार से असहयोग करने का प्रचार प्रारम्भ किया।

सरदार पटेल ने भी अपनी बैरिस्टरी छोड़ दी थी और अपनी सारी शक्ति देश-सेवा में लगाने का उन्होंने प्रण कर लिया। उन्होंने गुजरात का दौरा किया। वहां पर भाषण किए। जनता को उत्साहित किया। गुजरात के घर-घर में इनकी पूजा होने लगी।

पंजाब की घटना से इनके मन में अंग्रेज़ों के प्रति इतनी घृणा उत्पन्न हो गई कि इन्होंने अपने पुत्रों को अंग्रेज़ी स्कूलों से हटा लिया। पहले यह अपने पुत्रों को पढ़ने के लिए विलायत भेजना चाहते थे, किन्तु अब इनके विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया।

गुजरात में एक विद्यापीठ की स्थापना की जिसके लिए इन्होंने बर्मा तक जाकर चन्दा जमा किया और दस लाख रुपये जमा कर लिये।

सन् 1922 ई० की पांच फरवरी को गोरखपुर के समीप के स्टेशन चौरी-चौरा में पुलिस और जनता में संघर्ष हो गया। जनता ने उग्र रूप धारण कर लिया और वहां सब सिपाहियों तथा थानेदार को थाने में बन्द करके जला दिया गया। असहयोग आन्दोलन के लिए शांति की आवश्यकता थी परन्तु यहां की जनता शांति बनाये रखने में असफल रही। महात्मा गांधी ने आन्दोलन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया। सरकार ने गांधीजी पर मुकदमा चलाकर उनको 6 वर्ष कैद की सजा सुना दी।

महात्माजी के पकड़े जाने पर गुजरात-आन्दोलन का कार्यभार सरदार पटेल ने ही सम्भाला।

बोरसद की जनता को भी सरकार ने दबाया। वहां की जनता पर सरकार ने कई जुर्म लगाकर यहां पुलिस-व्यवस्था करने के लिए जनता पर चालीस हज़ार रुपये कर और लगा दिए। जो जुर्म वहां की जनता पर लगाए गए थे, उनमें तनिक भी सत्यता नहीं थी। यह बात सरदार से भी छिपी हुई नहीं थी। सरदार ने यहां पर भी इसका विरोध किया और

सरकार के विरुद्ध एक बड़ा भारी जनमत खड़ा कर दिया। सरकार तथा वहां के पुलिस अफसरों को इस शेर के सामने घुटने टेकने पड़े।

1923 में नागपुर में कांग्रेस ने अपने तिरंगे झंडे के साथ जुलूस निकालने की घोषणा की। सरकार ने इस जुलूस पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सरदार पटेल ने यहाँ पर अपनी योग्यता का अपूर्व परिचय दिया। उन्होंने गुजरात से कई जत्थे स्वयंसेवकों के भेजे। कांग्रेस ने जुलूस पर लगाए गए प्रतिबन्ध को अपना अपमान समझा। इसी समय सेठ जमनालाल को सरकार ने हिरासत में ले लिया और अब इस सत्याग्रह का कार्यभार पटेल के कंधों पर ही आ गया। उन्होंने आन्दोलन को नया ही रूप दिया जिससे सारे भारतवर्ष में आन्दोलन हो गया। संगठन की प्रबलता को देखकर सरकार इनके आगे झुक गई। गवर्नर ने सरदार पटेल से बातचीत करने के पश्चात् जुलूस निकालने की आज्ञा दे दी और जनता की मांगें भी स्वीकार कर ली गईं।

महात्मा गांधी जेल से छूट गए। सरदार को अब कुछ आराम मिला। गांधी जी के जेल जाने पर पटेल की ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ गई थी। गांधी जी ने पटेल को अपनी ज़िम्मेदारी पूरी तरह निभाने पर हार्दिक

बधाई दी ।

इसी समय आप अहमदाबाद म्युनिस्पैलिटी के चेयरमैन भी बन गए । आपने इस पद पर रहते हुए लगातार पांच वर्ष तक जनता की निरन्तर सेवा की और वही कार्य किए जिनसे जनता की अधिक भलाई होती थी ।

गुजरात में बड़े ज़ोर की बाढ़ आयी जिससे अनेक गांव बरबाद हो गए । ऐसे समय पटेल ने बाढ़-पीड़ितों की बहुत सहायता की थी ।

बारडोली का सत्याग्रह

बम्बई प्रान्त में बारडोली एक छोटा-सा तालुका है । यहां पर 20 या 30 वर्ष बाद भूमि का नया इन्तजाम होता था और सरकार की ओर से लगान भी तय कर दिया जाता था । जो लगान सरकार द्वारा तय कर दिया जाता था, किसानों को अगले वर्षों में वह देना पड़ता था ।

सदैव की भांति अधिकारियों ने भूमि की जांच-पड़ताल की और लगान में 25 प्रतिशत वृद्धि कर देने का सुझाव भी सरकार को दिया गया । किसानों की दशा में तनिक भी सुधार नहीं हुआ था । किसान

जो लगान अब भी सरकार को दे रहे थे वह भी अनुचित था। सरकारी अधिकारियों को गलत रिपोर्ट के कारण जुलाई सन् 1927 ई० को सरकार ने लगान की दर में 25 प्रतिशत की वृद्धि कर दी।

सरकार ने लगान इसलिए बढ़ा दिया कि भूमि की उपज बढ़ गई थी और खेतों का मूल्य भी बढ़ गया था।

बारडोली तालुका समिति ने सरकारी अधिकारियों की रिपोर्ट का खण्डन किया और आंकड़े देकर सरकार को बताया कि लगान में वृद्धि उचित नहीं है और सरकार की लगान की मौजूदा दर को भी अनुचित बताया। जनता के प्रतिनिधि सरकार से भी मिले परन्तु सरकार ने उनकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी।

सरकार का लगान वृद्धि का प्रस्ताव पास हो गया। इसके बाद राव साहब दादूभाई देसाई की अध्यक्षता में किसानों की एक सभा हुई और इस सभा में लगान की बढ़ी हुई दर न चुकाने का फैसला किया गया। सरकार पर इसका असर नहीं पड़ा और अधिकारी-गणों को बढ़ी हुई दरों पर लगान वसूल करने के लिए सरकारी आदेश आ गए।

अब सब लोग पटेल के पास आए। सरदार ने

उनकी बातें ध्यान से सुनी। पटेल ने किसानों को समझाया और आशा भी दिलाई। सरकार ने उनसे कहा, "आप सब लोग एक होकर लगान न देने का फैसला कर लो। हर तरह का कष्ट सहन करने के लिए तैयार होओ। यदि आप यह सब कुछ कर सकें तो मैं आपकी सहायता करने के लिए तैयार हूं। तुम लोग सारे तालुके में घूमो और मुझे आकर बताओ कि और किसानों की क्या राय है? क्या वे आपका साथ देने को तैयार हैं?"

सभी ने पटेल भी बात मान ली और कार्यकर्त्ता रात-दिन एक करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमने लगे। आठ-दस दिन में ही उन्होंने सारे तालुके की छान-बीन कर ली। अधिकांश गांवों की राय जानकर सभी लोग अहमदावाद लौटे। इनके साथ अब्बास पंड्यजी, रविशंकर महाराज आदि भी थे। पटेल के नेतृत्व में यह मण्डली गांधी जी से जाकर मिली। गांधी जी को पूर्ण स्थिति से अवगत कराया गया। गांधी जी ने पटेल को विजयी होने का आशीर्वाद दिया।

पटेल 24 फरवरी को बारडोली आए। उस दिन तालुके के सभी गांव वहाँ एकत्रित हुए। सरदार ने सबकी अच्छी तरह परीक्षा की और उन्हें कसौटी पर भी कसा। पटेल ने जनता का आह्वान किया। किसानों

को आश्वासन देकर पटेल अहमदाबाद वापस आ गए । 6 फरवरी को सरदार ने सरकार को पत्र लिखा जिसमें प्रार्थना की गई कि सरकार इस समय लगान की वसूली स्थगित कर दे और सारे मामले पर नये सिरे से विचार करे जिससे किसानों को भी कुछ राहत मिल सके ।

गवर्नर ने इस पत्र पर विशेष ध्यान नहीं दिया । पत्र को माल विभाग में जांच के लिए भेज दिया गया । लगान वसूली का आदेश नहीं रुका । अधिकारी लगान वसूली के लिए कार्यवाही करने लगे ।

सरकार ने 12 फरवरी तक किसानों को कर चुकाने के लिए मुनादी कर दी । मालगुजारी के लिए जो अधिकारी नियुक्त हुए थे वे तरह-तरह के उपाय काम में लाते थे परन्तु वे किसानों से कर वसूल करने में असफल रहे ।

जब 12 फरवरी तक खजाने में कुछ भी जमा नहीं हुआ तो सरकार का क्रोध बढ़ गया । सरकार ने कर वसूल करने वालों को अयोग्य समझकर उनको निकालकर उनके स्थान पर नये अधिकारी नियुक्त किए । ये अफसर ऐसे थे जो किसानों के साथ कड़ाई भी कर सकते थे ।

किसान-संगठन अब सुदृढ़ हो गया था । आन्दोलन

का सब समाचार 'सत्याग्रह समाचार' नामक दैनिक समाचारपत्र में छपता था। अधिकारियों को किसानों ने स्पष्ट बता दिया कि वे कर नहीं देंगे।

सरकारी अधिकारी जब कर वसूल करने आते तो किसान उनका स्वागत नहीं करते थे। उनसे कोई बात भी नहीं करता था और न ही उन्हें बैठने के लिए कोई स्थान दिया जाता था। यहाँ तक कि किसानों ने उनको पानी तक के लिए नहीं पूछा।

सरकारी अधिकारी किसानों का सामान कुड़क कर नीलामी करने लगे, तब किसी भी गांव वाले ने बोली नहीं बोली।

अधिकारी भी असमंजस में पड़ गए। अफसर लोग बाहर से ऐसे लोगों को बुला लाए जो नीलामी का सामान खरीदना चाहते थे। नीलामी के सामान की बोली बोलने वालों में एक पारसी सरदार था। सामान खरीदने के लिए वह बोली तो बोल देता था परन्तु खरीदे हुए सामान को ले जाने के लिए मजदूर भी नहीं मिलते थे।

पटेल जिले-भर के नेता माने जाते थे। सत्याग्रह का संचालन भी उन्हीं के हाथों हो रहा था। वह अपने कार्यों में किसी को दखल नहीं देने देते थे, चाहे वह कांग्रेसी ही क्यों न हो!

कुछ बाहरी कांग्रेसी पटेल से मिलने गए। वे बारडोली के आन्दोलन में सहायता देना चाहते थे। सरदार को उनकी बात पर गुस्सा आया। वे बाहरी सहायता लेना नहीं चाहते थे। उन्हें बाहरी सहायता की कोई आवश्यकता नहीं थी। उन कांग्रेसजनों ने पटेल को बताया कि वे पारसी सरदार को नीलामी का सामान न खरीदने के लिए मना करने आए हैं। यह बात सुनकर पटेल ने कहा, "बारडोली में एक ही सरदार है जिसकी आज्ञा सभी मानते हैं।"

कांग्रेसजनों ने गांधी जी से जाकर यह बात कही। गांधी जी इस बात को सुनकर हंस पड़े और कहने लगे कि वल्लभभाई वास्तव में सरदार ही हैं। तभी से पटेल को 'सरदार' कहा जाने लगा।

अब सरकार का क्रोध और भड़क गया था। सेना का भी प्रयोग हुआ। हज़ारों आदमी हिरासत में ले लिये गए। पुलिस के अत्याचार बढ़ गए। घर से स्त्रियों का निकलना कठिन हो गया। पानी पर भी प्रतिबन्ध लग गया। किसानों ने तनिक भी आवाज नहीं उठाई। वे सब कुछ चुपचाप सहन कर रहे थे।

सरकार ने अब पठानों को भी भरती कर लिया। पठान किसानों पर मनभाने अत्याचार करने लगे। सरकार के सभी प्रयत्न विफल हो गए और वह किसानों

को किसी तरह भी नहीं झुका सकी ।

समाचारपत्रों में सरकार की निन्दा होने लगी। जनता जब समाचारपत्र पढ़ती तो उसके हृदयों को ठेस पहुंचती थी ।

यह सब देखकर बम्बई की कौंसिल के 16 सदस्यों ने गवर्नर को अपना त्याग-पत्र दे दिया। इसी समय पटेल के बड़े भाई दिल्ली में केन्द्रीय असेम्बली के सभापति थे। उन्होंने सरकार से इस मामले में हस्तक्षेप करने को कहा। सरकार को उन्होंने यह धमकी भी दी कि यदि उसकी बात पर विचार न हुआ तो वे अपने पद से त्याग-पत्र दे देंगे और सरदार पटेल के साथ सत्याग्रह में सम्मिलित होकर देश-सेवा में हाथ बंटाएंगे ।

देश-भर के स्वयंसेवक सत्याग्रह को सहायता देने के लिए धन तथा अन्य सामान जुटा रहे थे। प्रत्येक प्रांत से स्वयंसेवक आने को तैयार थे ।

अन्त में जब सरकार का कुछ वश न चला तो सरकार को झुकना पड़ा। एक जांच कमेटी नियुक्त की गई। इसके अध्यक्ष हाईकोर्ट के एक जज थे ।

बड़ी दौड़-धूप के बाद सरकार तथा किसानों में अगस्त सन् 1928 को समझौता हो गया। अदालत ने केवल साढ़े छः प्रतिशत वृद्धि का सुझाव दिया। दोनों

पार्टियों ने इसको स्वीकार कर लिया। किसानों की नीलाम की हुई सम्पत्ति किसानों को वापस कर दी गई। लोगों को पुनः नौकरियों पर रख लिया गया। गिरफ्तार व्यक्तियों को रिहा कर दिया गया। अगस्त को तालुके-भर में विजय-दिवस मनाया गया और इस सत्याग्रह ने ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त किया।

सरदार को सफलताओं में से यह सफलता सबसे बड़ी थी। पटेल का नाम अब भारत में ही नहीं, विदेशों में भी चमकने लगा।

जेल-यात्रा

इधर महात्मा गांधी ने 2 मार्च, 1930 ई० को वायसराय को एक पत्र में यह स्पष्ट लिखा कि यदि सरकार ने नमक-कानून वापस नहीं लिया तो वे इसे तोड़ने के लिए सत्याग्रह करेंगे। सरकार का उत्तर सन्तोषजनक नहीं था। 21 मार्च को गांधी जी ने 80 स्वयंसेवकों के साथ नमक-कानून तोड़ने के लिए डांडी (सूरत में समुद्रतट पर स्थित एक स्थान का नाम) की ओर प्रस्थान किया। 6 अप्रैल को सम्पूर्ण भारतवर्ष में सत्याग्रह आरम्भ हो गया। नमक-कानून टूटने लगा। जनता ने जगह-जगह पर नमक बनाकर

बेचना शुरू कर दिया ।

जब यह सत्याग्रह आन्दोलन जोरों पर था तो सरदार पटेल को भी 7 मार्च, 1930 को हिरासत में ले लिया था । इन पर मजिस्ट्रेट की आज्ञा भंग करके भाषण करने का जुर्म लगाया गया । इसी में सरदार को 500 रुपया जुर्माने के साथ-साथ तीन मास की कड़ी सजा हुई । सरदार को जेल में तरह-तरह के कष्ट दिए गए । सरदार का स्वास्थ्य भी गिर गया । 27 जून, 1930 को पटेल को जेल से मुक्ति मिली ।

जेल से मुक्त होने पर सरदार ने सत्याग्रह में कोई भी कमी नहीं पायी । सरकार ने गिरफ्तारियां शुरू कर दी थीं । बड़े-बड़े नेता जेल जा चुके थे । महात्मा गांधी को भी 5 मई को पकड़ लिया गया था और इस समय वे यरवदा जेल में थे । पंडित मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष थे । सरकार ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी को अवैध घोषित कर पंडित मोतीलाल को गिरफ्तार कर लिया । सरदार पटेल को अब इस पद पर बिठाया गया । सरदार पटेल ने नमक-सत्याग्रह को बल दिया । कठिन समय था । सरकार ने अपने सभी प्रबल उपाय किए । गोली चलाना, लाठीचार्ज करना, मार-पीट करना आदि तो बच्चों का खेल ही हो गया था ।

1 अगस्त को लोकमान्य तिलक की बरसी थी। बम्वई नगर में धारा 144 लगी हुई थी। पटेल भी बम्बई में थे। इसी सम्बन्ध में पटेल ने एक बड़ा जुलूस निकालकर धारा 144 को तोड़ने का निश्चय किया। पंडित मदनमोहन मालवीय ने भी आपका साथ दिया। सरदार ने एक विशाल जुलूस निकाला। सरकार ने जुलूस को अवैध घोषित कर दिया और इसको आगे बढ़ने से रोक दिया। जुलूस वहीं रुक गया। 24 घण्टे तक जुलूस शांति के साथ वहीं खड़ा रहा। पुलिस ने पटेल तथा डॉक्टर हार्डीकर, मालवीय आदि नेताओं को पकड़ लिया और जुलूस को लाठी-चार्ज करके तितर-बितर कर दिया। सरदार को तीन मास की जेल हुई।

अब गांधी जी और इर्विन में समझौता हो गया। समझौते के अनुसार सत्याग्रह बन्द हो गया और सभी राजनैतिक नेता भी जेलों से रिहा कर दिए गए।

सन् 1931 के मार्च के अन्त में कांग्रेस का अधिवेशन कराची में हुआ। सरदार पटेल को इस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया। कांग्रेस ने पहली बार यहां पर भारत की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक रूपरेखा पर विचार किया। इसी अधिवेशन में राष्ट्रीय झंडे के रंग के बारे में विचार-विनिमय

हुआ। प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को अभी-अभी फांसी हुई थी। अतः यह समारोह भी सादगी से मनाया गया। युवक गांधी जी को ही इस फांसी के लिए जिम्मेदार मानते थे, अतः उन्होंने अपना रोष प्रकट करने के लिए गांधी जी का अधिवेशन में काले झण्डों से स्वागत किया।

अधिवेशन के अन्त में सरदार पटेल ने भाषण दिया। भाषण के आरम्भ में सरदार भगतसिंह आदि क्रांतिकारियों की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। जनता को सत्य और अहिंसा के पथ पर चलने की प्रेरणा दी। भाषण से जनता में नई जागृति आ गई।

कांग्रेस का यह अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में अपना एक प्रमुख स्थान रखता है।

महात्मा गांधी अब गांधी-इर्विन समझौते के अनुसार गोलमेज़ कांफ्रेंस में भाग लेने इंग्लैंड गए।

महात्मा गांधी की अनुपस्थिति में कांग्रेस की पूर्ण जिम्मेदारी पटेल पर आ गई। सरदार ने अपनी जिम्मेदारी को बड़ी कुशलता से निभाया।

सरकार ने गांधी जी के पीछे भी दमन की अपनी नीति को नहीं छोड़ा। पटेल ने गांधी जी के वापस आने तक कोई भी कदम न उठाने का निश्चय किया।

लन्दन में गोलमेज़ कांफ्रेंस में कोई समझौता

नहीं हो सका। वार्ता असफल हो गई और गांधी जी स्वदेश खाली हाथ वापस लौट आए।

महात्मा गांधी ने आते ही सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। सारे भारतवर्ष में आन्दोलन पुनः जाग्रत हो उठा। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक बम्बई में हुई। पंडित नेहरू इसमें भाग लेने बम्बई जा रहे थे। इनको मार्ग में ही पकड़ लिया गया। महात्मा गांधी ने इस सम्वन्ध में वायसराय को लिखा परन्तु कोई उत्तर नहीं आया। देश-भर में गिरफ्तारियां आरम्भ हो गईं। सभी बड़े-बड़े नेता पकड़ लिय गये। सरदार पटेल को भी पकड़ लिया गया।

कई दिनों तक यह आन्दोलन चलता रहा। गांधी जी जेल से छूटे तो उन्होंने कांग्रेसी नेताओं के परामर्श से आन्दोलन स्थगित कर दिया।

सत्याग्रह वन्द होने पर सरकार ने पटेल के अतिरिक्त सभी वन्दियों को रिहा कर दिया। सरकार पटेल को छोड़ना नहीं चाहती थी। सरकार को ज्ञात था कि सरदार जेल से छूटने पर भी उसके लिए सिर-दर्द बन जाएगा।

वन्दीगृह में सरदार का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन खराब होने लगा। देश-भर की जनता चिन्तामग्न हो गई। अन्त में सरकार ने सरदार पटेल के स्वास्थ्य

को ध्यान में रखकर सन् 1934 के अन्त में सरदार को मुक्त कर दिया।

इधर सन् 1935 में सरकार ने प्रान्तों में नये चुनाव की घोषणा की। कांग्रेस ने चुनाव लड़ने का फैसला किया। पटेल को कौंस्लि चुनाव लड़ने तथा पार्लियामेंटरी बोर्ड की जिम्मेदारी सौंपी गई।

चुनाव के समय पटेल ने लोगों को समझाया और कांग्रेस की जीत होने पर उसके लाभ भी बताए।

सरदार पटेल ने कहा था, "शूर युद्ध में पीठ नहीं दिखाते, जो युद्ध में पीठ दिखाते हैं वे शूर नहीं होते।"

पटेल ने जनता को इतना प्रोत्साहित किया कि 1937 के चुनाव में कांग्रेस को आठ प्रान्तों में कांग्रेस का अपना मन्त्रिमंडल बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ।

आरम्भ में सरदार ने यह निश्चय कर लिया कि यदि मंत्रिमंडल के काम में गवर्नर हस्तक्षेप करेंगे तो कांग्रेस मंत्रिमंडल नहीं बनाएगी। इस बात को लेकर कांग्रेस और सरकार में गतिरोध उत्पन्न हो गया। अन्त में वायसराय ने इनकी बात मान ली। कांग्रेस ने अपना मंत्रिमंडल बनाकर आठ प्रांतों का राजप्रबंध अपने हाथों में ले लिया। सरदार ने इन मंत्रिमंडलों का नेतृत्व किया। पहले उन्होंने एक

अनुशासनात्मक ढंग अपनाया। पटेल के नेतृत्व में मंत्रिमंडल एक प्रभावशाली संस्था बन गया जिससे कांग्रेस का नाम और प्रसिद्ध हो गया। जनता को अब विश्वास हो गया कि अपनी सरकार तथा विदेशी सरकार में क्या अन्तर है। कांग्रेस के मंत्रिमंडल ने दो वर्ष तक कार्य किया।

यह प्रथम अवसर था जब विदेशी सत्ता ने स्वतन्त्र रूप से कांग्रेस को प्रान्तों का प्रबन्ध करने का अवसर दिया। एक बार उत्तर प्रदेश के एक गवर्नर ने इनके कामों में हस्तक्षेप किया। फिर क्या था, सरदार पटेल ने अपने कांग्रेस मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दिलवा दिया। अब सरकार और कांग्रेस में दोबारा गतिरोध उत्पन्न हो गया। सरकार झुक गई।

सरकार से समझौते पर सरदार ने कांग्रेस मंत्रि-मंडल को अपने कार्य को दोबारा आरम्भ करने का आदेश दिया।

राजसत्ता सम्भालने के पश्चात् कांग्रेस का मान और बढ़ गया। सरदार को अनुशासन पसन्द था। कोई भी व्यक्ति कांग्रेस के आदर्शों तथा नीतियों के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता था। एक बार सी० पी० के मुख्यमन्त्री डॉक्टर खरे ने कांग्रेस की नीतियों का पालन नहीं किया तो उसे तुरन्त ही मुख्यमन्त्री पद

से हटा दिया गया ।

स्वतन्त्रता आन्दोलन

सन् 1939 में द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया । ब्रिटेन ने इस युद्ध में भारत को भी सम्मिलित कर लिया । गांधी जी ने इस युद्ध का विरोध किया । वे ब्रिटेन की सहायता नहीं करना चाहते थे । वे चाहते थे कि पहले अंग्रेज़ भारत को स्वतंत्र करें, तभी भारतीय जनता उनका साथ देगी । सरकार ने उनकी वात ठुकरा दी और कांग्रेस मन्त्रिमंडलों को त्याग-पत्र देने का आदेश दे दिया और राज्यों का प्रवन्ध गवर्नरों के हाथों में सौंप दिया गया ।

महात्मा गांधी ने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए 1940 में सत्याग्रह आरम्भ कर दिया । इस सत्याग्रह में जनता को अंग्रेज़ों की सहायता न करने का परामर्श दिया गया । सरदार पटेल को भी इस सत्याग्रह में जेल हो गई ।

यह आन्दोलन असफल रहा । सन् 1942 में कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में अन्तिम आन्दोलन आरम्भ किया । 8 अगस्त 1942 को वम्बई में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ । इस

अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' का ऐतिहासिक प्रस्ताव पास हुआ।

इस प्रस्ताव में अंग्रेज़ों से भारतीय जनता को स्वशासन देने की मांग को दुहराया गया था और अंग्रेज़ों को तुरन्त भारत छोड़कर जाने के लिए भी कहा गया था।

सरकार इस घोषणा से क्रुद्ध हो गई और नेताओं की गिरफ्तारियां आरम्भ हो गईं। महात्मा गांधी तथा सरदार पटेल भी पकड़ लिये गए। महात्मा गांधी को तो पूना में आगाखां महल में रखा गया। सरदार पटेल को अहमदनगर फोर्ट में बन्द किया गया। नेताओं के गिरफ्तार होते ही जनता में भी क्रांति की लहर आ गई। जनता ने हिंसात्मक मार्ग अपनाया। गांधी जी की अहिंसा को लोगों ने भुला दिया। जनता ने रेलों की पटरियां उखाड़ दीं। थानों को जला दिया गया। टेलिफोन की तारें तक काट दी गईं। सतारा और बलिया जैसे स्थानों में जनता ने अपना राज्य भी स्थापित कर लिया।

सरकार ने इस क्रांति को दबाने के लिए कठोर पग उठाया। बच्चों, बूढ़ों और जवानों को गोलियों का निशाना बनाया गया। उनको तरह-तरह की यातनाएं भी दी गईं।

सन् 1945 में यह लड़ाई समाप्त हो गई। श्री भूलाभाई देसाई के यत्नों से जून में प्रमुख कांग्रेसी नेता रिहा हो गए। सरदार पटेल को भी 15 जून को रिहा कर दिया गया। राजनैतिक उलझन को हल करने के लिए भारत के वायसराय ने भारतीय राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाया। यहाँ मुस्लिम लीग (यह संस्था मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व करती थी) और कांग्रेस में समझौता न हो सका। समझौते का हर सम्भव प्रयत्न किया गया, परन्तु वह असफल हो गया। शिमला सम्मेलन टूट गया। इस सम्मेलन में सरदार ने प्रमुख भूमिका अदा की थी। सरदार पटेल ने विदेशी सत्ता को चेतावनी दी और कहा, "यदि सरकार ने हमें स्वतन्त्र न किया तो हम जबरदस्ती सत्ता छीन लेंगे।"

कांग्रेस के नेताओं के जेल जाने के बाद जनता में यह धारणा घर कर रही थी कि अब कांग्रेस की आन मेंकुछ परिवर्तन हो जाएगा। परन्तु सरदार की घोषणा से उनकी यह धारणा बदल गई। सरदार ने कहा कि 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का प्रस्ताव किसी मूल्य पर भी नहीं बदला जाएगा। यदि आवश्यकता होगी तो 'एशिया छोड़ो' का भी प्रस्ताव पास कर दिया जाएगा।

स्वतंत्र भारत

अब इंग्लैंड में आम चुनाव हुआ। चर्चिल का स्थान एटली ने ग्रहण किया। उनके आदेशानुसार 1945-46 में भारतवर्ष में भी चुनाव हुआ। सिंध और बंगाल में मुस्लिम लीग को बहुमत प्राप्त हुआ। दूसरे प्रान्तों में कांग्रेस को बहुमत मिला। 1946 में इंग्लैंड की लेबर सरकार ने अपने मंत्रिमंडल के तीन सदस्यों के एक दल को भारत की समस्या का हल ढूँढ़ने के लिए भेजा। इस दल ने विभिन्न राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों से मिलकर एक योजना तैयार की।

कांग्रेस ने इस योजना को स्वीकार कर लिया जिसके अनुसार एक अन्तरिम सरकार बनी। कांग्रेस भी इसमें शामिल हो गई। आरम्भ में मुस्लिम लीग ने यह योजना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् वह भी अन्तरिम सरकार में सम्मिलित हो गई। 21 सितम्बर, 1946 को पं० जवाहरलाल नेहरु ने अपना मंत्रिमंडल बनाया। सरदार पटेल गृहमंत्री बने। सूचना तथा प्रसारण विभाग भी आपके पास ही था। यह कार्यभार उन्होंने बड़ी कुशलता से राष्ट्र की भलाई के लिए स्वीकार किया।

सरकार की यह योजना भी असफल हो गई।

1947 में भारत के वायसराय वापस चले गए। इनके स्थान पर अंग्रेज़ सरकार ने लार्ड

माउण्टबेटन को वायसराय बनाकर भेजा। 28 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने भारतीय स्वतन्त्रता का बिल पास कर दिया।

अब फिर मुस्लिम लीग और कांग्रेस में समझौता न हो सका। लार्ड माउण्टबेटन ने भारतवर्ष को दो भागों में विभक्त कर दिया। भारत और पाकिस्तान के दो नये राज्य बने। इन दोनों राज्यों को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिल गई। दोनों को विदेशी दासता से मुक्ति मिल गई। अपने देश में अपना राज्य स्थापित हो गया। सरदार पटेल केन्द्रीय राष्ट्रीय सरकार के उपप्रधानमन्त्री बने।

स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् साम्प्रदायिक दंगे आरम्भ हो गए। पश्चिमी पंजाब, सीमाप्रान्त और बंगाल से हिन्दू-सिक्ख भारत आ गए और बहुत-से मुसलमान पाकिस्तान चले गए। इस अदला-बदली में असंख्य परिवार नष्ट हो गए।

गांधी जी ने इन दंगों को बन्द कराने के लिए आमरण अनशन आरम्भ कर दिया। नेताओं के विश्वास दिलाने पर इन्होंने अपना अनशन समाप्त कर दिया। परन्तु एक पागल नवयुवक ने 30 जनवरी को शाम को गांधी जी को गोली से मार डाला। सारे देश में शोक मनाया गया। इस घटना से सरदार पटेल को गहरा आघात पहुंचा।

देश में सरदार ने लीग की कुचालों को विफल कर दिया और समस्त विरोधी शक्तियों को पराजित

कर दिया ।

रियासतों का संगठन

अपने पद पर रहते हुए जो महत्त्वपूर्ण कार्य पटेल ने किए, उनमें से एक रियासतों का एकीकरण भी है। अंग्रेज़ भारत छोड़ते समय लगभग 600 रियासतों को स्वतंत्र छोड़ गये। इन रिसायतों का क्षेत्रफल काफी अधिक था। ये रियासतें राजाओं के अधीन थीं। विदेशी सत्ता के समय ये सब इंग्लैंड के राजाओं को कर देती थीं और अपने राज्य में अपना ही प्रबन्ध करती थीं। अंग्रेजों ने इन राजाओं की अपनी सरकार से हुए सभी समझौतों को रद्द कर दिया जिनके अधीन इन राजाओं का नियंत्रण हुआ करता था। भारत के सामने इनकी समस्या ने विकट रूप ग्रहण कर लिया।

सरदार पटेल ने इस समस्या का हल खोजा। सरदार यह समझते थे कि जब तक इन सबको भारत में नहीं मिलाया जाएगा, तब तक ये भारत के लिए सिरदर्द ही बने रहेंगे।

ऐसे समय में सरदार ने सब बड़े-बड़े नरेशों से बातचीत की और उनको भारत में सम्मिलित हो जाने के लिए मना लिया गया। उनकी दूरदर्शिता से छोटी-बड़ी रियासतों को भारत में मिला लिया गया। इन रियासतों के राजाओं ने अपनी इच्छा से शासन का भार जनता को सौंप दिया।

इसी समय हैदराबाद के नरेश ने भारत में मिलने से इनकार कर दिया। उसने अपनी स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह कर दिया। पटेल ने तुरन्त निर्णय करके भारतीय फौज की सहायता से इस पर हमला कर दिया। कुछ दिनों तक तो इसका काफी प्रतिरोध हुआ परन्तु शीघ्र इस रिसायत को जीतकर इसको स्वाधीन कर लिया गया।

कश्मीर की समस्या को भी इन्होंने इसी ढंग से हल करने का प्रयत्न किया था परन्तु कुछ बड़े नेताओं के बीच में आने के कारण हल नहीं हो सकी और आज भी यह समस्या जहां थी, वहीं पर है।

सरदार ने भारत को एकता की डोरी में बांध दिया। इन्होंने भारत को ऐसा इकट्ठा किया जिसको अभी तक कोई भी नहीं कर सका था। इस प्रकार इन्होंने अंग्रेज़ों की 'बाँटो और राज्य करो' की नीति को विफल कर दिया।

हवाई दुर्घटना

25 मार्च, 1949 को सरदार पटेल दिल्ली से जयपुर के लिए राजस्थान यूनियन का उद्घाटन करने के लिए गए। मार्ग में हवाई जहाज में कुछ खराबी आ गई। पायलट ने वायुयान को बड़ी होशियारी से मार्ग में ही उतार लिया, जिससे पटेल को मार्ग में विलम्ब हो गया।

ठीक समय जब ये जयपुर नहीं पहुँचे तो सभी नेताओं में चिन्ता की लहर दौड़ गई। वायुयान तथा मोटर गाड़ियों द्वारा इनकी तलाश आरम्भ हो गई। सरदार पटेल चार-पांच घंटे बाद जयपुर सकुशल पहुँच गए। जनता तथा नेताओं में हर्ष छा गया।

स्वर्गवास

सरदार पटेल को 15 दिसम्बर, 1950 को हृदयरोग का दौरा पड़ा और 9 बजकर 37 मिनट पर बिड़ला भवन में आपका देहान्त हो गया।

मृत्यु के समय भी आपके मुख पर एक अलौकिक कांति विद्यमान थी।

मृत्यु से दो घंटे पूर्व पुरोहितों ने मन्त्रों का उच्चारण प्रारंभ कर दिया था। इनके मुख में गंगाजल तथा तुलसीदल भी डाला गया। आपके पुत्र श्री दाह्याभाई पटेल ने श्री पटेल के शरीर को गंगाजल से नहलाया और उसके उपरान्त उनके शरीर को बिड़ला भवन के सामने एक पुष्पशैया पर जनता के दर्शनार्थ रख दिया गया।

अपार जनसमूह ने आपका दर्शन किया और प्रत्येक ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

सरदार पटेल के शव का जुलूस उसी दिन रात को श्मशानघाट पर पहुँचा।

सार्वजनिक नेताओं ने इनके शव को सम्मानपूर्वक

फौजी गाड़ी से उतारकर अपने कन्धों पर रखा और उसे सफेद चबूतरे पर सफेद चादर से ढककर लिटा दिया।

अब डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, श्री नेहरू, श्री राजगोपालाचारी तथा अन्य सम्मानित व्यक्तियों ने सरदार पटेल के चरण स्पर्श किए और उनके शव पर फूलमालाएँ चढ़ाईं।

7 बजे चिता में आग लगा दी गई। जनसमूह तथा नेताओं की आँखों से अश्रुधारा बह चली।

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद तथा चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

नेहरूजी से भी कुछ बोलने के लिए कहा गया, किन्तु उनका हृदय इतना दुःखी हो रहा था कि वे अपनी भावनाएँ व्यक्त करने में असमर्थ थे। उन्होंने इसके लिए क्षमा मांगी।

सरदार पटेल की मृत्यु से सम्पूर्ण देश शोक-संतप्त हो गया। सारे भारत में शोक मनाया गया। सरकारी झंडे झुका दिए गए। सभी कार्यालय, बाज़ार तथा अन्य स्थान बन्द रहे। इस तरह भारतभूमि पर से एक महान देशभक्त उठ गया जिसको हम कभी नहीं भूल सकते।

सरदार पटेल का जीवन आने वाले नवयुवकों को एक नयी प्रेरणा देता है और उनमें नवजागरण उत्पन्न करता है। ऐसे नेता को देश कभी नहीं भूलेगा।

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No.

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, if not recalled earlier.

सरदार पटेल

Library IIAS, Shimla
H 028.5 P 272 S
00077933